16/04/2020 कक्षा - VII सुभाषितानि

Page No.
Date: / /

प्रथमः पाठः

(1) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ।

प्रसंग → प्रस्तुत श्लोक हमारी संस्कृत की पाठ्य पुस्तक 'रुचिरा' भाग-2 के 'सुभाषितानि' पाठ से लिया गया है। इसके माध्यम से बताया गया है कि-

सरलार्थ → पानी, अन्न और अच्छे (मधुर) वचन - ये तीन ही रत्न धरती पर हैं, परन्तु मूर्खों के द्वारा पत्थर के टुकड़ों को ही रत्न समझा जाता है।

(2) सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।

सरलार्थ → सत्य के द्वारा पृथ्वी को धारण किया जाता है, सत्य के द्वारा ही सूरज तपता है। हवा/पवन भी सत्य के द्वारा बहती है और सबकुछ सत्य में ही स्थित है।

(3) दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा।

सरलार्थ → सज्जनों के साथ ही बैठना चाहिए, सज्जनों के साथ ही संगति करनी चाहिए, सज्जनों के साथ ही विवाद (झगड़ा) और मित्रता करनी चाहिए, असज्जनों के साथ तो कोई भी व्यवहार नहीं करना चाहिए